लेखकों ने अपने अनुभव साझा किए

साहित्योत्सव
2020
(24 से 29 फरवरी)

पूर्व राष्ट्रपति कार्यक्रम में नहीं आए

साहित्योत्सव में प्रतिष्ठित संवत्सर व्याख्यान पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी द्वारा दिया जाना था। अकादमी के अधिकारियों ने बताया कि वह किसी कारणवश नहीं आ पाए। लेकिन, प्रणब मुखर्जी द्वारा उपलब्ध कराए गए लिखित व्याख्यान का पाठ साहित्य अकादमी के अंग्रेजी परामर्श मंडल की संयोजक संयुक्ता दासगुप्ता ने किया।

नई दिल्ली | प्रमुख संवाददाता

साहित्य अकादमी की ओर से आयोजित किए जा रहे साहित्योत्सव के तीसरे दिन लेखक-सम्मिलन कार्यक्रम के तहत साहित्य अकादमी पुरस्कार 2019 के विजेताओं ने पाठकों के सामने अपने रचनात्मक अनुभवों को साझा किया।

काव्य संग्रह 'छीलते हुए अपने को' के लिए साहित्य अकादमी से पुरस्कृत साहित्यकार नंदकिशोर आचार्य ने कहा कि नए और बदलते आयामों का उद्घाटन ही कविता का धर्म है और यह अन्वेषण ही हमारी शब्द-चेतना के नए आयामों का सृजन संभव करता है।

पुरस्कृत गुजराती लेखक रतिलाल बोरीसागर ने कहा कि आंतरिक शुद्धि हर मनुष्य का कर्तव्य है, लेकिन सर्जक का उत्तरदायित्व भी है। मैथिली में पुरस्कृत कुमार मनीष अरविंद भी मौजूद रहे। वहीं नाट्य लेखक वर्तमान परिदृश्य पर आयोजित परिचर्चा का उद्घाटन प्रख्यात राजस्थानी लेखक और वर्तमान में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के कार्यकारी अध्यक्ष अर्जुनदेव चारण ने किया। वहीं साहित्य अकादमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने अध्यक्षीय वक्तव्य दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता साहित्य अकादमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने की।

'भारतीय परंपरा का प्रकृति के साथ है आध्यात्मिक संबंध'

नई दिल्ली, 27 फरवरी(नवोदय टाइम्स) : साहित्योत्सव के चौथे दिन वीरवार को तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी 'प्रादेशिकता, पर्यावरण और साहित्य, अखिल भारतीय एलजीबीटीक्यू कवि सम्मेलन और पुरस्कृत लेखकों की प्रतिष्ठित साहित्यकारों/विद्वानों से बातचीत कार्यक्रम 'आमने-सामने' आयोजित किए गए। शाम को ताल वाद्य कचेरी प्रस्तुत की गई। प्रादेशिकता, पर्यावरण और साहित्य विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रख्यात कन्नड लेखक एसएल. भैरप्पा ने कहा कि समस्त भारतीय भाषाओं में प्रकृति शब्द का प्रयोग शरीर या शारीरिक स्वास्थ के लिए किया जाता है। पश्चिमी और भारतीय मान्यताओं के अनुसार मनुष्य और प्रकृति के बीच संकटों में एक बुनियादी अंतर है। भारतीयों के लिए प्रकृति ईश्वर की

साहित्योत्सव चौथा दिन

पाकर तिरस्कार तुम्हारा अनजाने में सबल हुई मैं : रवीना बारिहा

एक रचना या अभिव्यक्ति है और इसलिए वह पवित्र और पूजा के योग्य है। पश्चिम के लोग मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए पेड़ों और जंगलों को बनाए रखने की वकालत करते हैं जबकि भारतीय परंपरा प्रकृति के साथ अपने आध्यात्मिक संबंध को बनाए रखने के लिए यही काम करती है। साहित्योत्सव में वीरवार को आयोजित हुए एलजीबीटीक्यू कवि सम्मेलन के मुख्य अतिथि एवं अंग्रेजी के प्रख्यात कवि होशांग मर्चेंट ने अपनी तीन कविताओं का पाठ किया। जिसमें

दस एलजीबीटीक्यू ने प्रस्तुत कीं कविताएं

अगले सत्र में विक्रमादित्य सहाय की अध्यक्षता में दस एलजीबीटीक्यू कवियों द्वारा कविताएं प्रस्तुत की गईं। जिसमें रवीना बारिहा ने अपनी कविता में कहा कि 'दुख के पाठ पढ़कर और निर्मल हुई मैं' पाकर तिरस्कार तुम्हारा अनजाने में सबल हुई मैं'। इस कवि सम्मेलन में अदिति आंगिरस, चांदनी, गिरीश, शांता खुराई, रेशमा प्रसाद, अब्दुल रहीम, आकाश, तोशी पांडेय, विशाल पिंजाणी, अलगू जगन और डेनियल मेंडोका ने अपनी कविताएं प्रस्तुत कीं।

एक कविता प्रख्यात गणितज्ञ रामानुजम की मृत्यु पर केंद्रित थी और उसका शीर्षक 'रोशनी' था। सम्मेलन के बीज वक्तव्य में अंग्रेजी शिक्षक आर.राज राव ने कहा कि आज से 17 महीने पहले स्थितियां दूसरी थीं और यह कल्पना करना भी मुश्किल था कि हमारे प्रतिनिधि इस तरह किसी सार्वजनिक मंच पर अपनी अभिव्यक्तियों को प्रस्तुत कर सकेंगे। उन्होंने कहा कि आज भी हम कानूनन कुछ अधिकार पा चुके हैं लेकिन अभी भी हमारी लड़ाई सामाजिक पहचान बनाने की है। अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने कहा कि एलजीबीटीक्यू लोगों के साथ किए जाने वाला अमानवीय व्यवहार उन्हें व्यथित करता है। हमें सामाजिक तौर पर उन्हें पूरी तरह स्वीकार करना होगा तभी हम एक संतुलित समाज की कल्पना कर पाएंगे।

प्रकृति को मनुष्य का दर्जा देना होगा

नई दिल्ली | प्रमुख संवाददाता

साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित साहित्योत्सव के चौथे दिन महाकाव्यों, उपाख्यानों एवं मिथकों में प्रकृति विषय पर केंद्रित अपने अध्यक्षीय भाषण में साहित्य अकादेमी के पूर्व अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कालीदास की संस्कृत रचनाओं में हिमालय के सौंदर्य के कुछ रोचक प्रसंगों पर बात करते हुए कहा कि हमें प्रकृति को मनुष्य का दर्जा देना होगा तभी हम उसे बचा पाएंगे।

उन्होंने कहा कि प्रकृति के प्रति किसी भी बातचीत से पहले यह बात महत्त्वपूर्ण है कि हम उसके प्रति किस तरह का नजरिया रखते हैं। यदि हमारी दृष्टि उपयोगितावादी है तो हम उसको शोषण की दृष्टि से देखेंगे और अगर हमारी दृष्टि पारंपरिक है तो हम उसे पूजनीय मानेंगे। उन्होंने बांग्ला साहित्य में विभूतिभूषण बंद्योपाध्याय, ओड़िआ साहित्य में गोपीनाथ महंति का जिक्र करते हुए कहा कि कोई भी सृर्जनात्मक रचना पाठकों में तब स्थान पाती है जब वह प्रकृति के प्रति निर्मल होती है।

पहली बार आयोजित हुआ एलजीबीटीक्यू कवि सम्मेलन

साहित्य अकादेमी द्वारा पहली बार एलजीबीटीक्यू कवि सम्मेलन आयोजित हुआ। सम्मेलन के मुख्य अतिथि एवं अंग्रेज़ी के प्रख्यात कवि होशांग मर्चेंट ने अपनी तीन कविताओं का पाठ किया। एक कविता प्रख्यात गणितज्ञ रामानुजम की मृत्यु पर केंद्रित थी और उसका शीर्षक 'रोशनी' था। एलजीबीटीक्यू लोगों को होने वाली परेशानियों पर केंद्रित कविता में उन्होंने मंजनू को पत्थर मारने का प्रतीक प्रयुक्त किया। अपने बीज भाषण में आर. राज राव ने कहा कि आज से 17 महीने पहले स्थितियां दूसरी थी और यह कल्पना करना मुश्किल था कि हमारे प्रतिनिधि इस तरह किसी सार्वजनिक मंच पर अभिव्यक्तियों को प्रस्तुत कर सकेंगे। उन्होंने इसके लिए लंबी कानूनी लड़ाई का जिक्र करते हुए बताया कि आज भी हम कानूनन कुछ अधिकार पा चुके हैं लेकिन हमारी लड़ाई सामाजिक पहचान बनाने की है।

‘भारतीयों के लिए प्रकृति पूजा योग्य’

जनसत्ता संवाददाता
नई दिल्ली, 27 फ़रवरी।

साहित्योत्सव के चौथे दिन गुरुवार को तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी प्रादेशिकता, पर्यावरण और साहित्य, अखिल भारतीय एलजीबीटीक्यू कवि सम्मेलन और पुरस्कृत लेखकों की प्रतिष्ठित साहित्यकारों/विद्वानों से बातचीत कार्यक्रम ‘आमने-सामने’ का आयोजन किया गया।

प्रादेशिकता, पर्यावरण और साहित्य विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्‌घाटन करते हुए प्रख्यात कन्नड़ लेखक व साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य एस एल भैरप्पा ने कहा कि समस्त भारतीय भाषाओं में प्रकृति शब्द का प्रयोग शरीर या शारीरिक स्वास्थ्य के लिए किया जाता है। पश्चिमी और भारतीय मान्यताओं के अनुसार मनुष्य और प्रकृति के बीच संकटों में एक बुनियादी अंतर है। भारतीयों के लिए प्रकृति ईश्वर की एक रचना या अभिव्यक्ति है और इसलिए वह पवित्र और पूजा के योग्य है। इस उद्‌घाटन सत्र का बीज वक्तव्य अमित चौधरी ने दिया और अध्यक्षीय भाषण चंद्रशेखर कंबार ने दिया।

महाकाव्यों, उपाख्यानों व मिथकों में प्रकृति पर केंद्रित चर्चा में साहित्य अकादेमी के पूर्व अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि प्रकृति के प्रति किसी भी बातचीत से पहले यह बात महत्त्वपूर्ण है कि हम उसके प्रति किस तरह का नजरिया रखते हैं। अगर हमारी दृष्टि उपयोगितावादी है तो हम उसको शोषण की दृष्टि से देखेंगे और अगर दृष्टि पारंपरिक है तो हम उसे पूजनीय मानेंगे। साहित्य अकादेमी की ओर से पहली बार आयोजित एलजीबीटीक्यू कवि सम्मेलन में स्वागत भाषण देते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव के श्रीनिवासराव ने कहा कि हम लोग भारत के सभी कवियों का बिना भेदभाव के सम्मान करते हैं और उन्हें मंच प्रदान करते हैं।

भारतीय परंपरा प्रकृति के साथ अपने आध्यात्मिक संबंध बनाए रखें: भैरप्पा

वैभव न्यूज ■ नई दिल्ली

साहित्योत्सव के चौथे दिन बृहस्पतिवार को तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी प्रादेशिकता, पर्यावरण और साहित्य, अखिल भारतीय एलजीबीटीक्यू कवि सम्मिलन और पुरस्कृत लेखकों की प्रतिष्ठित साहित्यकारों व विद्वानों से बातचीत कार्यक्रम आमने-सामने आयोजित किए गए। शाम को सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत भारतीय वाद्य यंत्रों की समेकित प्रस्तुति ताल वाद्य कचेरी प्रस्तुत की गई।

प्रादेशिकता, पर्यावरण और साहित्य विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए प्रख्यात कन्नड लेखक व साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य एस एल भैरप्पा ने कहा कि समस्त भारतीय भाषाओं में प्रकृति शब्द का प्रयोग शरीर या शारीरिक स्वास्थ के लिए किया जाता है। पश्चिमी और भारतीय मान्यताओं के अनुसार मनुष्य और प्रकृति के बीच संकटों में एक बुनियादी अंतर है। भारतीयों के लिए प्रकृति ईश्वर की एक रचना या अभिव्यक्ति है और इसलिए वह पवित्र और पूजा के योग्य है। पश्चिम के लोग मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए पेड़ों और जंगलों को बनाए रखने की वकालत करते हैं, जबकि भारतीय परंपरा प्रकृति के साथ अपने आध्यात्मिक संबंध को बनाए रखने के लिए यही काम करती है। इस उद्घाटन सत्र का बीज वक्तव्य अमित चौधरी ने दिया और अध्यक्षीय भाषण चंद्रशेखर कंबार ने दिया। संगोष्ठी का अगला सत्र जो महाकाव्यों, उपाख्यांनों व मिथकों में प्रकृति विषय पर केंद्रित था में अपना अध्यक्षीय भाषण प्रस्तुत करते हुए साहित्य अकादेमी के पूर्व अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि प्रकृति के प्रति किसी भी बातचीत से पहले यह बात महत्त्वपूर्ण है कि हम उसके प्रति किस तरह का नजरिया रखते हैं। यदि हमारी दृष्टि उपयोगितावादी है तो हम उसको शोषण की दृष्टि से देखेंगे और अगर हमारी दृष्टि पारंपरिक है तो हम उसे पूजनीय मानेंगे। उन्होंने साहित्य में विभूतिभूषण बंद्योपाध्याय, ओड़िआ साहित्य में गोपीनाथ महंति का जिक्र करते हुए कहा कि कोई भी सृर्जनात्मक रचना पाठकों में जब ही स्थान पाती है जब वह प्रकृति के प्रति निर्मल भावनाओं के साथ व्यक्त की जाती है। उन्होंने कालीदास की संस्कृत रचनाओं में हिमालय के सौंदर्य के कुछ रोचक प्रसंगों पर बात करते हुए कहा कि हमें प्रकृति को मनुष्य का दर्जा देना होगा तभी हम उसे बचा पाएँगे। उन्होंने महात्मा गांधी जी का जिक्र करते हुए कहा कि शायद वे विश्व के अंतिम बड़े व्यक्ति थे, जिन्होंने पर्यावरण सुरक्षा को अपना मुख्य विषय बनाया था। साहित्य अकादेमी द्वारा पहली बार आयोजित एलजीबीटीक्यू कवि सम्मिलन में स्वागत भाषण देते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने कहा कि हम लोग भारत के सभी कवियों का बिना भेदभाव के सम्मान करते हैं और उन्हें मंच प्रदान करते हैं। सम्मिलन के मुख्य अतिथि व अंग्रेजी के प्रख्यात कवि होशांग मर्चेंट ने अपनी तीन कविताओं का पाठ किया। एक कविता प्रख्यात गणितज्ञ रामानुजम की मृत्यु पर केंद्रित थी और उसका शीर्षक 'रोशनी' था। एलजीबीटीक्यू लोगों को होने वाली परेशानियों पर केंद्रित कविता में उन्होंने मंजनू को पत्थर मारने का प्रतीक प्रयुक्त किया।

भारतीयों के लिए प्रकृति ईश्वर की एक रचना : भैरप्पा

नई दिल्ली (एसएनबी)। साहित्योत्सव के चौथे दिन बृहस्पतिवार को प्रादेशिकता, पर्यावरण और साहित्य, कवि सम्मेलन और पुरस्कृत लेखकों की प्रतिष्ठित साहित्यकारों/विद्वानों से बातचीत कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रादेशिकता, पर्यावरण और साहित्य विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए कन्नड़ लेखक एवं साहित्य अकादमी के सदस्य एसएल भैरप्पा ने कहा कि पश्चिमी और भारतीय मान्यताओं के अनुसार मनुष्य और प्रकृति के बीच संकटों में एक बुनियादी अंतर है। भारतीयों के लिए प्रकृति ईश्वर की एक रचना या अभिव्यक्ति है और इसलिए वह पवित्र और पूजा के योग्य है। उन्होंने कहाकि पश्चिम के लोग मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए पेड़ों और जंगलों को बनाए रखने की वकालत करते हैं, जबकि भारतीय परंपरा प्रकृति के साथ अपने आध्यात्मिक संबंध को बनाए रखने के लिए यही काम करती है। साहित्य अकादमी के पूर्व अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि प्रकृति के प्रति किसी भी बातचीत से पहले यह बात महवपूर्ण है कि हम उसके प्रति किस तरह का नजरिया रखते हैं। यदि हमारी दृष्टि उपयोगितावादी है तो हम उसको शोषण की दृष्टि से देखेंगे और अगर हमारी दृष्टि पारंपरिक है तो हम उसे पूजनीय मानेंगे। उन्होंने महात्मा गांधी का जिक्र करते हुए कहा कि शायद वे विश्व के अंतिम बड़े व्यक्ति थे, जिन्होंने पर्यावरण सुरक्षा को अपना मुख्य विषय बनाया था। साहित्य अकादमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने कहा कि हम लोग भारत के सभी कवियों का बिना भेदभाव के सम्मान करते हैं और उन्हें मंच प्रदान करते हैं। सम्मेलन के मुख्य अतिथि एवं अंग्रेज़ी कवि होशांग मर्चेंट ने अपनी तीन कविताओं का पाठ किया।